International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-02-2020; Accepted: 10-03-2020; Published: 11-04-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 53-54

हिन्दी साहित्य के नामबड़े आलोचक "नामवर सिंह"।

अर्जुन पासवान
शोधार्थी हिन्दी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम, भारत

प्रस्तावना

" मैं गया तो था सरस्वती के मंदिर में पूजा करने के,लेकिन वहां कचरा इतना देखा कि हाथ में झाड़ू उठा लिया।" नामवर सिंह।

माना यह जाता हैं कि आलोचना साधारणतः एक नीरस काम है और आलोचकों को मूल रचनाकारों की तरह बड़ी संख्या में प्रशंसक और पाठक नसीब नहीं होते। ऐसा डॉ. नामवार सिंह के साथ नहीं दिखाई देता। नामवर सिंह दूसरे साहित्यकारों की भांति कविता लिखकर ही अपने साहित्य जीवन की शुरूवात की और धीरे धीरे साहित्य के आलोचना के कार्य में लग गए। आचार्य शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा रामविलास शर्मा जैसे विद्वान आलोचकों को अपने आराध्य मानने वाले नामवर सिंह अपने आप में एक असाधारण प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, उन्हें हिन्दी साहित्य के आलोचना की वाचिक परम्परा के आचार्य माना जाता हैं। जैसे कि साहित्यकार बाबा नागार्जुन घूम-घूमकर किसानों और मजदूरों की सभाओं से लेकर छात्र-नौजवानों, बुद्धिजीवियों और विद्वानों तक की गोष्ठियों में अपनी कविताएँ बेहिचक सुनाकर जनतान्त्रिक संवेदना जगाने का काम करते रहे, वैसे ही नामवर जी घूम-घूमकर वैचारिक लड़ाई लड़ते रहे, रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास, कलावाद, व्यक्तिवाद आदि के खिलाफ चिन्तन को ही प्रेरित करते रहे हैं। इस वैचारिक, सांस्कृतिक अभियान में नामवर जी एक तो विचारहीनता की व्यावहारिक काट करते रहे हैं, दूसरे वैकल्पिक विचारधारा की ओर से लोकशिक्षण भी करते रहे हैं।

लेख का महत्व

डॉ नामवर सिंह बहिर्मूखी प्रकृति के व्यक्ति तथा समाज के लोगो के बीच रहना तथा उनके मनोभाव को झाकने वाले व्यक्ति थे। वे हिन्दी के सबसे अधिक पठनीय और श्रवणीय आलोचक थे। वे आलोचना को युद्ध न मानकर अपना कर्तव्य मानते थे। उनकी शोध कार्य में "हिंदी के विकाश में अपभ्रंश का योग" तथा "पृथ्विराज रासो भाषा और साहित्य" में उन्होंने अपभ्रंश भाषा की हिंदी में योगदान के संदर्भ में आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

इनका जन्म बनारस के जीयनपुर (वर्तमान में चंदौली ज़िला) नामक गाॅव में 28 जुलाई 1926 ई० को हुआ। इनका नाम एक दलित बुढ़ी औरत की देन है, उन्होंने सिर्फ एक नज़र में देखकर इनका नाम नामवर रख दिया था, जिसे घरवालों ने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। बचपन से ही अत्यधिक अध्ययनशील तथा विचारक प्रकृति के थे नामवर सिंह। उन्होंने वाराणसी के हीवेट क्षत्रिय स्कूल से मैट्रिक और उदयप्रताप कालेज से इंटरमीडिएट किया।फिर बनारस हिंदु युनिवर्सिटी से हजारी प्रसाद द्विवेदी के अधीन में इन्होंने अपना पीएचडी पूरा किया। उनके सानिध्य में डॉ नामवर सिंह आधुनिक हिंदी साहित्य में सच्चे अर्थों में विशुद्ध आलोचना करते हुए प्रगतिशील आलोचना की नींव रखी। इन्होंने दृष्टिकोण छायावाद के प्रति दूसरे आलोचक से भिन्न रहा है, वे छायावाद को आलोचना करने के विपरीत इसके साहित्य सौन्दर्य की हमेशा प्रसंशा करते रहे।

आरंभ में हिन्दी के अपभ्रंश साहित्य से आरम्भ करते हुए निरन्तर समसामयिक साहित्य से भी जुड़े वे जुड़े रहे। उन्हें कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाने का मौका मिला था। वे अपने विचारों से समझौता करने वालों में नहीं थे और इसीलिए उन्होंने स्वयं के प्रयास से जेएनयू के हिंदी विभाग में कई मानक काम करते हुए, कई नवीन साहित्यिक पुस्तकों को भी अपने पाठ्यक्रम से जोड़ने का काम किया, जिसके कारण उन्हें बहुत बार आलोचनाओं का सामना भी करना पड़ा और वे इसके लिए तैयार थे। उन्होंने जब हिंदी साहित्य जगत में अपने पांव रखे तब सामाजिक और अंतराष्ट्रिय स्तर पर शीतल युद्ध का दौर चल रहा था, वही सांस्कृतिक दिशाओं में भी अंतरद्वंद का माहोल था। फिर भी नामवर सिंह अपने वाचन शैली के लिए भी मशहूर थे इसलिए उनके वक्तव्य को सुनने के लिए छात्रों में होड़ सी लगी रहती थी।

आलोचक के **अलावा** शिक्षक और संपादक की भूमिका में भी नामवर सिंह अविस्मरणीय रहे। लंबे समय तक 'आलोचना' का संपादन करते हुए उन्होंने इसे हिन्दी की केंद्रीय वैचारिक पत्रिका बनाए रखा।उनकी अमर कृत्तियों में 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां(1954),छायावाद(1955)तथा 'इतिहास और आलोचना(1957), कहानी : नयी कहानी –(1964) 'कविता के नये प्रतिमान – (1968) 'दूसरी परम्परा की खोज – (1982) 'वाद विवाद संवाद (1989) नामक उनकी पुस्तकें आधुनिक काल की यथार्थ चित्रों को हमारे समक्ष रखने में समर्थ है। 'कविता के नए प्रतिमान' के लिए 1971 में उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया था, उनकी हिंदी के अतिरिक्त उर्दू, एवं संस्कृत भाषा पर भी पकड़ थी। छायावाद युगीन साहित्यिक मतभेद तथा उनके भावों को उन्होंने एक अलग मोर दिया,जिसे शुक्ल तथा रामविलास शर्मा भी नकार न सके।वही दूसरी ओर भारतीय पंरपराओं के संदर्भ में उन्होंने भी बहुत बातें कही। अंतत कहा जा सकता है कि इनके योगदान क बिना हिंदी आलोचना साहित्य अधुरा है।

लेख का उद्देश्य:

- भारतवर्ष में गीतों के राजकुमार के रूप में प्रसिद्ध तथा सभी भारतीय भाषाओं में साहित्य के प्रति रुचि रखने वाले प्रख्यात आलोचक थे डॉ. नामवर सिंह। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि "आप कम लिखने का आरोप मुझ पर भले ही लगा लें, यह आरोप नहीं लगा सकते कि मैंने पढ़ने में कोई कोताही की है।" उन्होंने हिंदी साहित्य के प्राचीन से लेकर आधुनिक प्रवृत्तियों को अपने अंदाज से देखा तथा दिखाया। एक मार्क्सवादी आलोचक होने के नाते वे आत्मालोचन को अधिक महत्व देते थे। उनके विचारों से असहमति होने के बावजूद वे लोगों को सम्मान देना जानते थे। उनके व्याख्यानों और लेखों में भी इसके सक्रिय उदाहरण मिलते हैं। यही कारण भी रहा कि हिन्दी क्षेत्र के शिक्षित जनता के बीच मार्क्सवाद और वामपंथ के बहुत लोकप्रिय नहीं होने के बावजूद नामवर जी उनके बीच प्रतिष्ठित और लोकप्रिय हैं। नामवर जी ने आधुनिक कहानी के संदर्भ में लिखा है कि, 'हो सकता है, जिसे 'आधुनिक' कहानी कहा जाता है, उसमें कारण का उल्लेख अवश्य रहता हो लेकिन आधुनिकोत्तर युग की कहानी में कारण प्रायः अनुल्लिखित रहता है या अधिक-से-अधिक उसकी ओर संकेत भर कर दिया जाता है'। उनके अनुसार भारतवर्ष में एक तो वचर्स्वशाली परंपरा है,जो अपने चरित्र में स्थितिवादि व अपने श्रौत से शास्त्रवादि तथा अपने स्वभाव में मर्यादावादि है। लेकिन वे यहां दूसरी परंपरा की खोज(1982) में जुटे, जो लोकोन्मुखी व परिवर्तशील है तथा स्वाधिनता के हितैसी हो।उन्हें यह भी दुख था कि दूसरी परंपरा की अपनी आदर्श मुल्य होने पर भी अंतत: वह पहली वाली परंपरा में विलीन क्यों हो

> जाती है। वे सिर्फ 'नायाब आलोचक' भर ही नहीं थे।लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार, वे अज्ञेय के बाद के हिंदी के सबसे बड़े 'स्टेट्समैन' थे, तो अपने छोटे भाई काशीनाथ सिंह के अनुसार हिंदी के आलोचकों में उनकी जैसी लोकप्रियता अन्य किसी को नहीं मिली।

डॉ नामवर सिंह ने हिंदी साहित्य के नए प्रतिमान तय किए और नए नए मुहावरे भी गढ़े। उन्हें 'शलाका सम्मान', हिंदी अकादमी के द्वारा,'साहित्य भूषण सम्मान' उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा,'शब्दसाधक शिखर सम्मान' इनिशिएटिव सोसायटी द्वारा 'महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान' प्रदान किया गया। उन्होंने एक साक्षात्कार में यह कहकर व्यक्त किया था, 'हिंदी भाषा और साहित्य' का काफी विस्तार हुआ है। वे हिन्दी भाषा के संदर्भ में कहते थे कि हिंदी भाषा में आज भले ही देश में भिन्न काम किया जा रहा है, लेकिन अभी भी हिंदी भाषी समाज को अपने साहित्यकारों से बहुत प्यार या लगाव नहीं है। वे कहते हैं कि "विदेशों में मैं देखता हूं कि जब दो लोग बात करते हैं तो पांच-सात मिनट के अंदर ही उनकी बातचीत में मिल्टन, हेमिंग्वे, शेक्सपियर, ब्रेख्त व चेखव आदि के उद्धरण सामने आने लगते हैं। लेकिन हमारे यहां ऐसा नहीं दिखता। हिंदी में बहुत से जनकवि हैं, लेकिन हिंदी जगत में उनकी रचनाएं उस रूप में प्रचारित नहीं होतीं।" एक आदर्श कवि, आलोचक और अभिज्ञ शिक्षक की मनोभाव को दर्शाना इस लेख का उद्देश्य है।

उपसंहार

डॉ नामवर सिंह अपने आप में एक अनुष्ठान थे, वे सदैव अध्ययनशील रहें, उनका मानना था कि "मरेंगे हम किताबों पर ही और वर्क होगा कफन अपना"। वे आजीवन किताबों के बीच रहे। इसलिए वे भविष्य की ओर देखनेवाले आशावादी थे, न कि पीछे की ओर अपनी यादों में जीनेवाले। हिन्दी साहित्य के इतिहास में डॉ नामवर सिंह बहुत ही चर्चित व्यक्ति हुए, जिनको उनके कविता, आलोचना व उनके विचारों तथा वाख्यानों के लिए हमेशा से याद किया जाता है और आगे भी यह चर्चा जारी रहेगा।वे मानते थे कि जब-जब अच्छे साहित्य की सृजन होती हैं तब तब अच्छी आलोचनाएं भी होती है। उनकी प्रसिद्धि इसी बात से पता चलता है कि वे अपनी विचार और वक्तव्य इतने प्रसिद्ध रहे कि आजीवन देश विदेश भ्रमण करते रहे, जिसका व्यय हमेशा से उनको सुनने वालों ने ही किया। उनका झुकाव सिर्फ हिंदी भाषा की ओर न होकर,सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में थी, खासकर उर्दू साहित्य में। मूलतः हम कह सकते हैं कि डॉ नामवर सिंह ने अपने नाम को वास्तव में सार्थक कर गए।

शोध ग्रंथ सूची

1. डॉ. बच्चन सिंह :- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास।
2. डॉ. नामवर सिंह :- इतिहास और आलोचना।
3. डॉ. नामवर सिंह :- वाद विवाद संवाद।
4. डॉ. नामवर सिंह :- कविता के नये प्रतिमान।
5. डॉ. नामवर सिंह :- इतिहास और आलोचना।
6. डॉ. नामवर सिंह :- इतिहास और आलोचना।
7. मीडिया।